71	ई शितेना नायकश्च जाता	89
72	नियोज्यः परिचार्कः ॥ ३५६ ॥ निर्मा	06
73	डिङ्गरः विंकरो भृत्यश्चेरो गोप्यः पराचितः ।	10
74	दासः प्रेष्यः परिस्कन्दा भुतिष्यपरिकर्मिणा ॥ ३६० ॥	
75	परानः परिपाउदः पर्तातः परिधितः । ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।	
76	भृतको भृतिभुग्वैतिनिकः कर्मकरो प्रिच च ॥ ३६१ ॥ ।	
77	स निर्मृतिः कर्मकारा	
78	॥ ७३६ ॥ भृतिः स्याद्भिष्क्रयः पणः ।	96
79	कर्मापा वेतनं मूल्यं निर्वेशा भर्णां विधा ॥ ३६२ ॥ जना	
80	भर्मााया भर्म भृत्या च	
81	॥ उड़ेई ॥ भागस्तु माणिकाभृतिः । । ।	66
82	वलपूः स्याद्वङकरो	
83	गाभार्वाव्स्तु भार्कः ॥ ३६३ ॥	8
84	वार्तावहे वैवधिका	
85	॥ दे सारे विवधवीवधा ।	
86	व्यापास्ने विश्वस्थां प्रमधः प्रमापामं निया क्रिमेलाइत क्रिया	
87	मिनार निमास निमासिक्षियद्वितिक्षिका ॥ ३६८ ॥ जन्म	
88	श्रामिदो वीरी विक्रानश्चा-	
	2-75. Diener (17 W.) 76. Diener, der einen Lohn	
kommt (4 W.). — 77. Diener, der keinen Lohn bekommt. — 78—80. Lohn (12 W.). — 81. Lohn eines Freudenmädchens. — 82. Kehrer		
(2 W.). — 83. Lastträger (2 W.). — 84. Ein Verkäufer, der seine		
Waare selbst herumträgt (2 W.). — 85. Last, Bürde (3 W.). —		
86. Der an den beiden Seiten des Joches herabhängende Strick, an		

dem die Last befestigt wird (2 W.). - 87. Ein Joch zum Tragen

einer Last. - 88. Beherzter Mensch (4 W.). ihnz nebaded nemie bonn